54

ISSN 2349-3887

दोआबा

समय से संगत

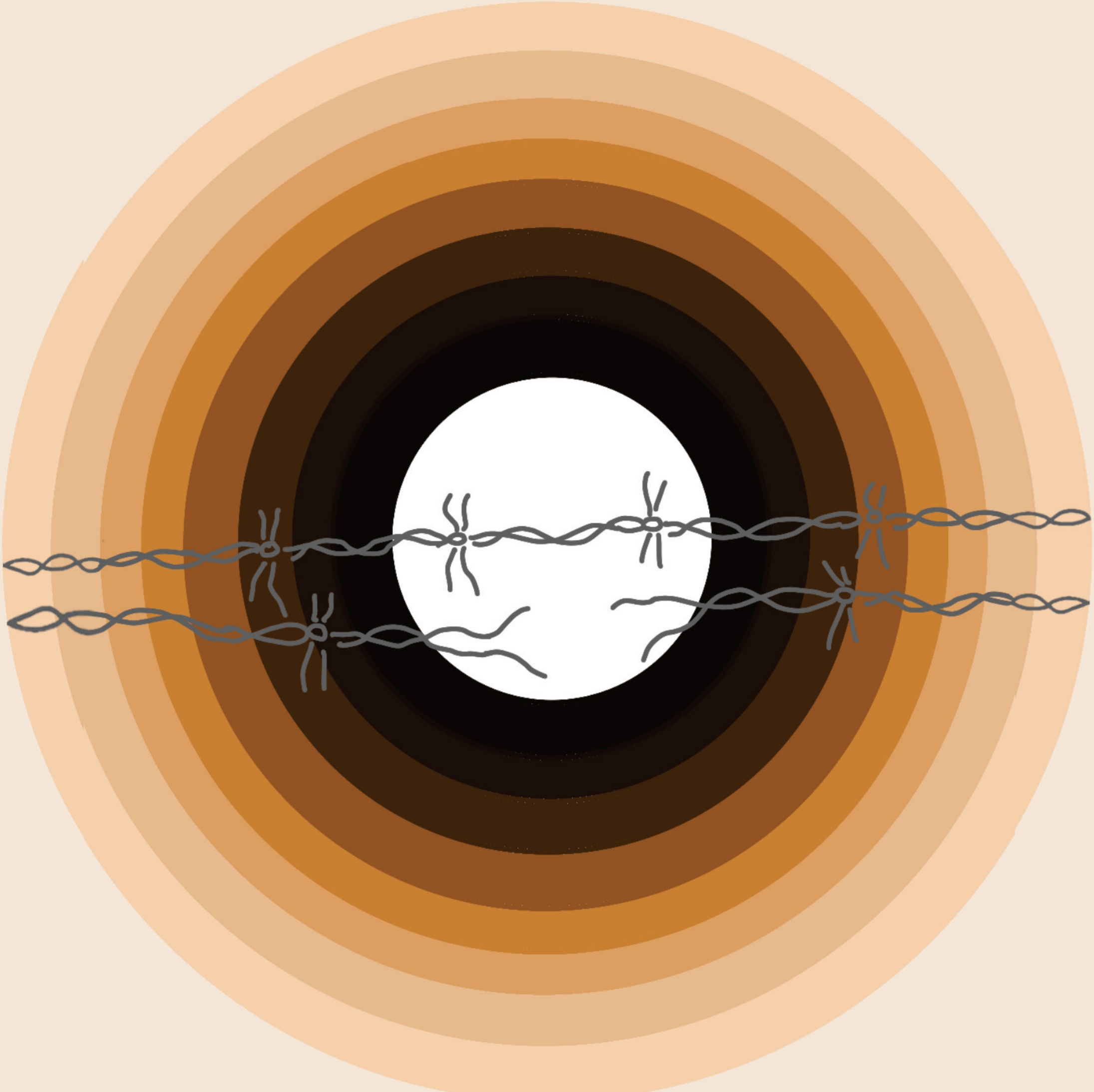

भविष्य एक मिथ की भांति मेरी आंखों के किसी उदास कोने में अटका हुआ है। हर सुबह हर शाम मैं इस अटके हुए मिथ को अपनी आंखों के भीतर शोक की मुद्रा में मौजूद पाता हूं। इस मिथ के बारे में मैंने हजारों साल पूर्व लिखी पुस्तकों को ध्यानपूर्वक पढ़ा है। हालांकि, उन पुस्तकों में ज्यादातर की भाषा मेरे लिए अजनबी थी। पर मैं इन भाषाओं के अक्षरों को अच्छी तरह पहचान सकता हूं।

मुझे मालूम है, दुनिया की सारी भाषाओं के अक्षर एक समान हैं। बाएं से दाएं लिखें या इसके उलट। ऊपर से नीचे लिखें या समरूप रेखाओं में। चित्रों की शक्ल में लिखें या सपाट लकीरों की सूरत में। उनमें अर्थ का एक तिलिस्मी संसार छिपा होता है।

मैं इस संसार की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध हूं।

– जाबिर हुसेन

छोटा सा एक पुल से

अक्टूबर–दिसम्बर 2025

दोआबा

समय से संगत

दोआबा

समय से संगत

अक्टूबर–दिसम्बर 2025
वर्ष 19 : अंक 54

रेखांकन

अनुप्रिया

मानद सहयोग

शहंशाह आलम
लता प्रासर, पवन कुमार, जावेद एक़बाल

प्रबंध

मोनिश हुसेन

कार्यालय : सुनील हेम्ब्रम

संपर्क
247 एम आई जी
लोहियानगर, पटना – 800 020
e-mail : doabapatna@gmail.com
मो.–08409044236

सर्वाधिकार सुरक्षित

पाकीज़ा ऑफसेट
शाहगंज, पटना–800 006
मो.–09334116542

मूल्य : ₹ 250/– (डाक खर्च सहित)

रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं।
संपादक का इन विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं।

***संपादक* : जाबिर हुसेन**
मो.–09431602575

अक्टूबर-दिसम्बर 2025

दोआबा

समय से संगत

अनुक्रम

जाबिर हुसेन : अपनी बात / 05

रचना-समय

नासिरा शर्मा : अमलतास के झुमके / 08
पूर्णिमा सहारन : चंबा कितनी क दूर / 19
तरसेम गुजराल : न्याय के लिए अनथक लड़ाई / 29
प्रेम कुमार : विकलता का शोभन प्रस्तुतीकरण / 39
विनीता बाडमेरा : उसकी मां जिंदा रहे / 44
मार्टिन जॉन : समाधान / 57
अमित रंजन : स्कैम / 65
तीर्थराज शर्मा : सिरजनहार / 72
सत्य शुचि : प्रश्न-चिह्न / 79
किसलय पंचोली : सीजर / 82

कविता-समय

नंदा पाण्डेय / 86
राजेन्द्र उपाध्याय / 94
धर्मपाल महेन्द्र जैन / 97
मीता दास / 103
चारुमित्रा / 104
अशोक सिंह / 106
महेन्द्र मद्धेशिया / 111
विक्रम सिंह / 113
पूनम सिन्हा 'श्रेयसी' / 115

संवाद

हरियश राय : क्या-क्या कहा करें जुबाने कलम से हम / 126
(संदर्भ : उर्मिला शिरीष की कहानियां)
रेत का सफ़र (जाबिर हुसेन)
नीरज दइया : साहित्यिक संवाद की एक और दस्तक / 142
रावी से यमुना तक (शैलेन्द्र शैल)
अवधबिहारी पाठक : लौटी हुई धार का स्तवन-सा कुछ / 145
रौशनी के दरमियां (पूनम सिंह)
वंदना गुप्ता : वैचारिक बहस की परिणति / 149
अचानक कबीर (अनवर शमीम)
ममता भारती : जीवन की लय में गुंथी हुई कविताएं / 156
नकारती हूं निर्वासन (प्रभा मुजुमदार)
ख़ुदेजा ख़ान : विसंगतियों के विरुद्ध मज़बूती से खड़ी कविताएं / 161
माटी-राग (हरियश राय)
चंद्रकला : तंत्र का फंदा और किसान की त्रासदी / 166
प्रजातंत्र में कबूतर (राजेश्वर वशिष्ठ)
मालिनी गौतम : एक बहुस्तरीय काव्य-यात्रा / 174
विलुप्त हो जाती हैं स्त्रियां (पल्लवी मुखर्जी)
विधान गुंजन : घरेलू एवं कामकाजी स्त्रियों के बदलते स्वरूप / 178

दोआबा-53 (जुलाई-सितम्बर, 2025)

सरला माहेश्वरी : जवाबदेही निबाहने की ज़िद / 181
शहंशाह आलम : आदमी के जीवन की विवधता, पीड़ा, बेचैनी
और संकट को लिपिबद्ध करती है *दोआबा* / 183
निधि अग्रवाल : स्वदेश दीपक पर सार्थक संवाद करती *दोआबा* / 185
गोपाल माथुर : *दोआबा* में छपना एक सम्मान जैसा / 185
मनोज मोहन : अलग-सा दिखता *दोआबा* / 186
रास बिहारी गौड़ : कथा के नए मानक - उपकथा में गोपाल माथुर / 187
लता प्रासर : जड़नुमा विचारों के शिकंजे / 188

□□